दिल्ली पब्लिक स्कूल,जम्मू

अभ्यास कार्य पत्र–1 (अर्द्ध वार्षिक परीक्षा हेतु)

सत्र–2018–19

कक्षा–आठवीं

विषय – हिंदी

प्र01 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़ते हुए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

बाहर बैठा–बैठा वन का पंछी वन के तमाम गीत गा रहा है,
और पिंजरे का पंछी अपनी रटी–रटाई बातें दोहरा रहा है,
एक की भाषा का दूसरे की भाषा से मेल नहीं।
वन का पंछी कहता है
'भाई पिंजरे के पंछी,तनिक वन का गाान तो गाओ।'
पिंजरे का पंछी कहता है
'तुम पिंजरे का संगीत सीख लो।'
वन का पंछी कहता है
'न, मैं सिखाए–पढ़ाए गीत नहीं गाना चाहता।'

क. उपरोक्त काव्यांश में किसके बीच वार्तालाप हो रहा है?
ख. वन का पंछी क्या गा रहा है?
ग. वन के पंछी ने कैसे गीत गाने से मना कर दिया?
घ. पिजरे का पंछी क्या कहता है?
ड. उपरोक्त काव्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

प्र02 नीचे लिखे गद्यांश को पढ़ते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

गरीब मजदूरसारा दिन खून–पसीना एक कर देने वाली मेहनत के बाद,सॉझ के समय पॉच रुपए , अपनी फटी–पुरानी चादर के कोने में बॉध कर शहर से निकला औरमजदूरों की बस्ती की ओर गया।दूर से ही उसने अपनी झोंपड़ी से धुँआ निकलते देखा और समझ गया कि मां उसके लिए खाना बना रही है।उसके घर में उसकी मॉ के सिवाय उसका कोई सगा–संबंधी नहीं था।उसके घर में एक चूल्हे और चार बरतनों के अलावा कुछ और नहीं था।उसकी चादर में पॉच रुपए थे, उसके मन में आशा भरी थी।सामने एक बारात आ रही थी। उसे लगा कि उसकी भी शादी होगी।

क. उपरोक्त पंक्तियों में मजदूर शब्द के लिए विशेषण छांटिए।
ख. मजदूर किसे देखकर शादी की कल्पना करने लगा ?
ग. उसकी चादर में कितने रुपए थे?
घ. आशा विलोम लिखिए।
ड. उपर्युक्त गद्यांश के लिए शीर्षक दीजिए।

प्र03 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़ते हुए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :–

पायो जी म्हें तो राम–रत्न धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, करि किरपा अपनायो।
जनम– जनम की पूंजी पाई, जग में सबै खोवयो।
खरचै न खुटै कोई चोर न लूटे,दिन–दिन बढ़त सवायो।
स्त की नाव खेवटिया सतगुरु,भवसागर तरि आयो।
मिरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख–हरख जस पायो।।

1. उपरोक्त पंक्तियॉ किस कविता से ली गई हैं?
2. प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार कौन हैं?
3. जीवन रूपी सागर को कौन पार लगा रहा है?
4. 'किरपा' शब्द का अर्थ लिखिए।
5. क्या खर्च करने पर भी खर्च नहीं होता?

प्र04 नीचे लिखे गद्यांश को पढ़ते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मधुबनी लोककला बिहार क्षेत्र की है। मधुबन का अर्थ माधुर्य–वन अथवा शहद उद्यान है। राधा– कृष्ण की मधुर लीलाओं के लिए प्रसिद्ध इस कला का सीधा संबंध माधुर्य से ही है। यह कलाकृतियॉ तैयार करने के लिए हाथ से बने कागज़ को गाोबर से लीपकर उसके उपर वनस्पति रंगों से पौराणिक गाथाओं को चित्रों के रूप में उतारा जाता है। इन कलाकृतियों में गुलाबी,पीला, लाल और सुगापंखी रंगों का प्रयोग होता हैं।दीवार और कागज़ के साथ यह कला मिट्टी के पात्रों,पंखों और विवाह के अवसर पर प्रयुक्त होने वाले थाल और थालियों पर भी की जाती है।

1. संपूर्ण गद्यांश में किस कला का वर्णन हुआा है?
2. उपरोक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?
3. इस कला में किन–किन रंगों का प्रयोग किया जाता है?
4. मधुबन का क्या अर्थ है?
5. वनस्पति' शब्द का अर्थ लिखिए।